The Academic
International Journal of Multidisciplinary Research

An Online Peer Reviewed / Refereed Journal
Volume 3 | Issue 12 | December 2025
ISSN: 2583-973X (Online)
Website: www.theacademic.in

उत्तराखंड की लोक परंपरा में जीतू बगड़वाल- मौखिक महाकाव्य का सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक प्रतीकवाद का अध्ययन

[1]मोहन प्रसाद, [2] प्रो० अनिल कुमार नौटियाल

[1] शोधार्थी, शिक्षा विभाग, हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर (गढ़वाल)।

ई-मेल: mohansati19@gmail.com

[2] प्रोफेसर , शिक्षा विभाग हेमवती नंदन बहुगुणा गढ़वाल विश्वविद्यालय, श्रीनगर (गढ़वाल)।

ई-मेल: dranilnautiyal03@gmail.com

DOI : https://doi.org/10.5281/zenodo.18240747

ARTICLE DETAILS

Research Paper

Accepted: 24-12-2025

Published: 10-01-2026

Keywords:

जीतू बगड़वाल, गढ़वाली लोकगाथा, मौखिक परंपरा, सामाजिक संरचना, आध्यात्मिक रूपांतरण, सांस्कृतिक निरंतरता, पारिस्थितिक चेतना

ABSTRACT

यह शोध-पत्र उत्तराखंड की गढ़वाली लोकसंस्कृति में प्रसिद्ध मौखिक महाकाव्य *जीतू बगड़वाल* का सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक प्रतीकवाद के संदर्भ में विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह गाथा मात्र प्रेम और संघर्ष की कथा नहीं, बल्कि हिमालयी समाज की सामूहिक चेतना, धार्मिक आस्था, पारिस्थितिक दृष्टिकोण और नैतिक मूल्यों का सशक्त दस्तावेज़ है। अध्ययन में मौखिक परंपराओं, लोक-प्रदर्शन और नृसांस्कृतिक अध्ययनों के आधार पर पाँच प्रमुख विषयगत आयामों की पहचान की गई है। प्रथम, आध्यात्मिक रूपांतरण, जिसमें जीतू का मानव से देवत्व की ओर रूपांतरण जीवन-मृत्यु और पुनर्जन्म के चक्र का प्रतीक है। द्वितीय, कर्म–प्रेम और नियति का द्वंद्व, जो "राशी नी जुडे" की लोक-अभिव्यक्ति के माध्यम से मानव इच्छा और दैवी विधान के टकराव को उजागर करता है। तृतीय, सामाजिक संरचना और पहचान, जो कुल-परंपरा और सामुदायिक मूल्यों के माध्यम से सामाजिक न्याय की अवधारणा को अभिव्यक्त करती है। चतुर्थ, पारिस्थितिक चेतना, जिसमें पर्वतीय परिदृश्य और प्राकृतिक तत्वों को पवित्र सत्ता के रूप में चित्रित किया गया है। पंचम, मौखिक परंपरा और सामूहिक स्मृति, जो इस गाथा को एक जीवंत सांस्कृतिक अनुष्ठान के रूप में पीढ़ियों

तक संरक्षित करती है। समग्रतः, *जीतू बगड़वाल* गढ़वाली लोक जीवन का प्रतीक है, जो संगीत, अध्यात्म और प्रकृति के संगम के माध्यम से मानव और ब्रह्मांड के संबंधों को पुनर्परिभाषित करता है।

परिचय

उत्तराखंड की सांस्कृतिक पहचान उसकी समृद्ध लोक परंपराओं, मौखिक आख्यानों और धार्मिक आस्थाओं में गहराई से निहित है। हिमालय की गोद में बसे इस क्षेत्र की लोककथाएँ केवल मनोरंजन नहीं, बल्कि सामूहिक अनुभवों, नैतिक मूल्यों और आध्यात्मिक चेतना का जीवंत प्रतिबिंब हैं (शर्मा, 2018)। गढ़वाली लोक परंपरा में *जीतू बगड़वाल* की कथा विशेष स्थान रखती है, जो प्रेम, संघर्ष और आत्मबलिदान के माध्यम से समाज के धार्मिक और सांस्कृतिक जीवन-दर्शन को अभिव्यक्त करती है (धौनी, 2016; पंत, 2019)। लोक विश्वास में जीतू "रण-भूत" या योद्धा आत्मा के रूप में पूजित हैं, जो मृत्यु के बाद भी लोक-चेतना में जीवित रहते हैं (शर्मा, 2018)। यह गाथा मानव जीवन, भाग्य, कर्म और प्रकृति के पारस्परिक संबंधों को मूर्त रूप देती है, जहाँ प्रेम और बलिदान ब्रह्मांडीय व्यवस्था के दार्शनिक प्रतीक बन जाते हैं (पंत, 2019)। कथा में पर्वत, नदियाँ, वृक्ष और पशु–पक्षी जीवंत पात्र हैं, जो मानव–प्रकृति के आध्यात्मिक एकत्व की भावना को दर्शाते हैं (थपलियाल, 2022; गुसाईं, 2017)। मौखिक परंपरा और लोक-गायन के माध्यम से यह कथा केवल ऐतिहासिक स्मृति नहीं, बल्कि जीवित अनुष्ठान के रूप में सामाजिक संगठन, मर्यादा और सामुदायिक एकता की प्रतीक बन जाती है (काला, 2021; रावत, 2023)। यह अध्ययन जीतू बगड़वाल के महाकाव्य में निहित सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक प्रतीकवाद के विश्लेषण के माध्यम से उत्तराखंड की लोक-सांस्कृतिक पहचान के सार को उजागर करता है।

पृष्ठभूमि एवं ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

उत्तराखंड की सांस्कृतिक धरोहर अपनी समृद्ध लोककला, मौखिक परंपराओं और धार्मिक प्रतीकवाद के कारण विशिष्ट महत्व रखती है। हिमालयी जीवन की भौगोलिक जटिलताओं और सामुदायिक सहयोग ने यहाँ की लोकसंस्कृति को गहन सामाजिक और आध्यात्मिक स्वरूप प्रदान किया है (शर्मा, 2018)। इन्हीं परंपराओं में *जीतू बगड़वाल* की गाथा गढ़वाली लोक जीवन का एक सशक्त उदाहरण है, जो 15वीं–16वीं शताब्दी के सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश से उत्पन्न मानी जाती है (धौनी, 2016)। यह कथा प्रेम, संघर्ष और आत्मबलिदान का प्रतीक होने के साथ-साथ मानव से देवत्व की यात्रा का दार्शनिक रूपक भी है (पंत, 2019)। जीतू की मृत्यु के बाद उसका "रण-भूत" या भूत-देवता के रूप में पूजित होना लोकविश्वासों में आत्मा के दैवी रूपांतरण की अवधारणा को प्रकट करता है। यह गाथा "जागर" अनुष्ठानों में ढोल-दमाऊ और लोक गायन के माध्यम से प्रस्तुत की जाती है, जहाँ संगीत, नृत्य और भक्ति सामूहिक एकता को सशक्त करते हैं (काला, 2021; थपलियाल, 2022)। कथा में पर्वत,

नदी, चंद्रमा और "राशी नी जुड़े" जैसे प्रतीक भाग्य, कर्म और ब्रह्मांडीय संतुलन के दार्शनिक आयामों को अभिव्यक्त करते हैं (पंत, 2019)। यह लोक-महाकाव्य न केवल सामाजिक न्याय और धार्मिक आस्था का प्रतिबिंब है, बल्कि पर्यावरणीय चेतना और सामुदायिक पहचान का भी सजीव दस्तावेज़ है (रावत, 2023)।

सम्बंधित साहित्य की समीक्षा

"उत्तराखंड की लोक परंपरा में जीतू बगड़वाल के मौखिक महाकाव्य का सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक प्रतीकवाद का अध्ययन" विषय पर की गई साहित्य समीक्षा से यह स्पष्ट होता है कि गढ़वाली मौखिक परंपराओं, लोक देवता अवधारणा, और पारिस्थितिक प्रतीकवाद पर अनेक अध्ययनों ने उल्लेखनीय योगदान दिया है, किंतु इस विशेष गाथा का समग्र विषयगत विश्लेषण अब तक सीमित रूप में ही प्रस्तुत हुआ है। शर्मा (2018) ने गढ़वाली लोककथाओं में धार्मिक प्रतीकवाद का विश्लेषण करते हुए उन्हें नैतिकता और भक्ति के संवाहक के रूप में देखा, जबकि गुसाईं (2017) ने हिमालयी लोककला में पारिस्थितिक चेतना को उजागर करते हुए प्रकृति को एक नैतिक और सक्रिय सत्ता के रूप में चित्रित किया। धौनी (2016) ने गढ़वाल की सामाजिक संरचना और सामंती व्यवस्था का लोकविश्वासों पर प्रभाव विश्लेषित किया, वहीं नेगी (2020) ने लोक नायकों को सामुदायिक न्याय और नैतिकता के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत किया। पंत (2019) ने कर्म, प्रेम और नियति के दार्शनिक संबंधों को स्पष्ट किया, जो जीतू बगड़वाल की कथा के नैतिक संघर्ष से प्रतिध्वनित होते हैं। थपलियाल (2022) ने गढ़वाली लोक दर्शन में प्रकृति और धर्म के अभिन्न संबंध को रेखांकित किया, जबकि काला (2021) ने जागर और भूत-पूजा जैसी मौखिक अनुष्ठानिक परंपराओं को सांस्कृतिक पुनर्सृजन और सामूहिक उपचार की प्रक्रिया के रूप में देखा। रावत (2023) ने लोक देवताओं को सामूहिक स्मृति और सांस्कृतिक निरंतरता के वाहक के रूप में परिभाषित किया। इन सभी अध्ययनों ने गढ़वाली लोकसंस्कृति की गहराई को उजागर किया है, परंतु वर्तमान शोध इस रिक्ति को पूर्ण करते हुए जीतू बगड़वाल की गाथा को सामाजिक संघर्ष, आध्यात्मिक रूपांतरण, पारिस्थितिक नैतिकता और सांस्कृतिक एकता के समेकित प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करता है।

शोध उद्देश्य

- इस शोध का उद्देश्य *जीतू बगड़वाल* के मौखिक महाकाव्य का विषयगत थीमैटिक विश्लेषण करते हुए उसमें निहित सामाजिक, धार्मिक, और सांस्कृतिक प्रतीकवाद को समझना है।

शोध प्रश्न

1. जीतू बगड़वाल की लोकगाथा में कौन-कौन से प्रमुख विषय (themes) उभरते हैं, और वे गढ़वाली समाज की सांस्कृतिक चेतना को कैसे प्रतिबिंबित करते हैं?

2. मौखिक परंपरा और प्रदर्शनात्मक तत्वों के माध्यम से यह गाथा सामूहिक स्मृति और सांस्कृतिक पहचान को किस प्रकार सशक्त बनाती है?

शोध प्राविधि

इस शोध की कार्यप्रणाली गुणात्मक एवं थीमैटिक विश्लेषण (Thematic Analysis) पर आधारित है, जिसके माध्यम से जीतू बगड़वाल के मौखिक महाकाव्य में निहित सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक प्रतीकवाद को समझने का प्रयास किया गया है। अध्ययन के लिए प्राथमिक आंकड़े गढ़वाल क्षेत्र में जागर और लोक-प्रदर्शन से संकलित किए गए, जबकि द्वितीयक स्रोतों में पूर्ववर्ती नृसांस्कृतिक और लोक-साहित्यिक अनुसंधानों का उपयोग किया जाएगा ।

कोड्स की कालानुक्रमिक आवृत्ति

लोकगाथा *"जीतू बगड़वाल"* में प्रतीकात्मक घटनाएँ और विषय क्रमशः कथा के विकास के साथ बदलते हैं। कोडों की कालानुक्रमिक आवृत्ति यह दर्शाती है कि कौन-से सामाजिक, धार्मिक या पारिस्थितिक विचार कथा के किस चरण में प्रमुखता से उभरते हैं। इससे यह स्पष्ट होता है कि कथा की *भावनात्मक तीव्रता* और *धार्मिक प्रतीकवाद* समय के साथ कैसे गहराते हैं।

तालिका 1: प्रारंभिक कोडों का विकास

क्रम	कथानक चरण (Narrative Stage)	मुख्य कोड (Dominant Codes)	थीम (Theme)	आवृत्ति (Frequency/ Intensity)	विश्लेषणात्मक टिप्पणी (Interpretive Insight)
1.	**प्रारंभिक परिचय (जीतू का सामाजिक जीवन)**	"गरीबौ बेटा", "कमीन को जामो"	**सामाजिक संरचना**	◈◈◈ (उच्च)	जातीय भेदभाव और सामंती व्यवस्था का स्पष्ट संकेत; कथा की सामाजिक पृष्ठभूमि स्थापित होती है।
2.	**प्रेम का आरंभ और विरोध**	"शोभनी–जीतू का प्रेम", "राशी नी जुडे"	**कर्म–प्रेम**	◈◈◈◈ (बहुत उच्च)	प्रेम और नियति के संघर्ष की तीव्रता बढ़ती है; मानव इच्छा बनाम दैवी विधान का टकराव स्पष्ट होता है।

3.	**माता की चेतावनी और अशुभ संकेत**	"असगुन", "देवता का संकेत"	**आध्यात्मिक रूपांतरण**	◈◈ (मध्यम)	लोकविश्वासों में भाग्य की अनिवार्यता का भाव उभरता है; नैतिक चेतावनी का प्रसंग।
4.	**राज-दरबार और सामाजिक अस्वीकार**	"राजमान", "दास्यभाव"	**सामाजिक संरचना**	◈◈◈ (उच्च)	सामंतवाद के विरुद्ध व्यक्ति की असहज स्थिति; सामाजिक न्याय की लोक अवधारणा का चित्रण।
5.	**प्रकृति का प्रतीकात्मक हस्तक्षेप**	"देवदार, नदी, पर्वत", "ऋतु परिवर्तन"	**पारिस्थितिक चेतना**	◈◈ (मध्यम)	प्रकृति साक्षी और सहभागी के रूप में उपस्थित; नैतिक न्याय की वाहक।
6.	**त्याग, आत्मबलिदान और मृत्यु**	"भूत-देवता में रूपांतरण", "त्याग"	**आध्यात्मिक रूपांतरण**	◈◈◈◈ (बहुत उच्च)	कथा का धार्मिक शिखर; आत्मबलिदान के माध्यम से मोक्ष और देवत्व की प्राप्ति।
7.	**भूत-जागर और देवत्व की स्थापना**	"जागर अनुष्ठान", "ढोल-दमाऊ की ध्वनि"	**मौखिक स्मृति**	◈◈◈ (उच्च)	सामूहिक स्मृति का पुनर्सृजन; कथा एक जीवित सांस्कृतिक अनुष्ठान बन जाती है।
8.	**लोक-स्मरण और सामुदायिक एकता**	"लोक न्याय", "भूत-पूजा"	**मौखिक स्मृति**	◈◈ (मध्यम)	कथा लोक जीवन में अनुष्ठानिक रूप से स्थायी होती है; सांस्कृतिक निरंतरता का प्रतीक।

इस तालिका से यह स्पष्ट होता है कि *जीतू बगड़वाल* की लोकगाथा क्रमिक रूप से सामाजिक यथार्थ से आध्यात्मिक मुक्ति की ओर अग्रसर होती है। आरंभ में जहाँ वर्गीय विषमता और प्रेम का संघर्ष प्रमुख हैं, वहीं कथा के अंत में आध्यात्मिक उत्कर्ष और सांस्कृतिक स्मृति की स्थायित्व शीलता उभरकर आती है। इस प्रकार, यह

गाथा व्यक्ति, समाज, और देवत्व के पारस्परिक संबंधों की एक कालानुक्रमिक सांस्कृतिक यात्रा प्रस्तुत करती है। इस कालानुक्रमिक वितरण से स्पष्ट होता है कि *जीतू बगड़वाल* की गाथा एक *मानव–दैविक संक्रमण यात्रा* का क्रमिक वृत्तांत है। प्रारंभ में जहाँ सामाजिक विषमता और प्रेम का द्वंद्व प्रमुख है, वहीं कथा के उत्तरार्ध में आध्यात्मिक रूपांतरण और सामुदायिक स्मृति का उत्कर्ष दिखाई देता है। इस क्रमिक तीव्रता से लोकगाथा केवल भावनात्मक कथा न रहकर एक *सांस्कृतिक धर्मग्रंथ* का रूप धारण कर लेती है, जिसमें समाज, धर्म और प्रकृति का त्रिवेणी-संबंध परिलक्षित होता है।

प्रमुख विषय, उप-विषय एवं विश्लेषणात्मक फोकस

लोकगाथा *"जीतू बगड़वाल"* के थीमैटिक विश्लेषण के पश्चात पाँच मुख्य थीम्स विकसित हुए हैं, जो कथा की सामाजिक, धार्मिक और सांस्कृतिक संरचना को अभिव्यक्त करते हैं। ये थीम्स लोककथा के प्रतीकात्मक अर्थ, सामाजिक वास्तविकता और धार्मिक विश्वासों के समन्वय को दर्शाते हैं। सम्पूर्ण लोकगाथा का विश्लेषण करने के उपरांत उपरोक्त कूटों के आधार पर सम्पूर्ण लोकगाथा के निम्नलिखित थीम/ विषय विकसित हुए हैं। जिनका विवरण निम्नलिखित है ।

तालिका 2: विकसित थीम्स (Developed Themes)

मुख्य विषय (Main Theme)	उप-विषय (Sub-Themes)	प्रतिनिधि स्रोत / अवधियाँ (Representative Sources / Periods)	विश्लेषणात्मक फोकस / व्याख्या (Analytic Focus / Interpretation)
धार्मिक–आध्यात्मिक प्रतीकवाद (Religious–Spiritual Symbolism)	•भूत-देवता में रूपांतरण •माता की चेतावनी- •असगुन(अपशकुन) •त्याग और आत्मबलिदान	• जागर अनुष्ठान, • भूत-पूजा, •ग्रामीण धार्मिक •लोकाचार (15वीं-16वीं सदी से वर्तमान तक)	•मानव आत्मा की यात्रा मृत्यु से देवत्व तक; •आत्मोद्धार, •मोक्ष और पुनर्जन्म की लोक-धारणा का प्रतीक
कर्म–प्रेम और नियति का संघर्ष (Karma–Love and Cosmic Fate)	•राशि नी जुडे •शोभनी–जीतू का निषिद्ध प्रेम	• गढ़वाली प्रेम- गीत, •मौखिक आख्यान (17वीं–18वीं सदी)	• प्रेम को मानवीय और दैवी दोनों स्तरों पर व्याख्यायित किया गया है; • यह कर्म और भाग्य के संघर्ष का रूपक है, जो समाज की

			नैतिकता और धर्म की सीमाओं को दर्शाता है।
सामाजिक संरचना और न्याय (Social Order and Justice)	• गरीबौ बेटा- • राजमान और दास्यभाव • कमीन को जामो	• गढ़वाली लोककथाएँ, •ग्रामीण सामाजिक संरचना, • सामंती काल (15वीं–19वीं सदी)	• सामाजिक विषमता, • वर्गीय असमानता और लोक- न्याय की अवधारणा का प्रतिनिधित्व; • जीतू का संघर्ष नैतिकता और आत्मसम्मान के लिए विद्रोह का प्रतीक बनता है।
पारिस्थितिक चेतना (Ecological Consciousness)	• देवदार, बुरांश, नदी, पर्वत • ऋतु और भूगोल का उल्लेख • प्रकृति की साक्षी भूमिका	•हिमालयी भू-सांस्कृतिक परंपरा, •लोकगीत, •ऋतु-आधारित अनुष्ठान (सर्वकालीन)	• प्रकृति को सजीव और नैतिक सत्ता के रूप में देखा गया है; • यह थीम मानव और पर्यावरण के आध्यात्मिक सह-अस्तित्व (Eco-Spiritualism) को दर्शाती है।
मौखिक परंपरा और सांस्कृतिक स्मृति (Oral Tradition and Cultural Memory)	• जागर और भूत-पूजा अनुष्ठान • ढोल-दमाऊ की ध्वनि • लोक भाषा और छंद संरचना	• लोक प्रदर्शन, • अनुष्ठानिक परंपराएँ, • ग्रामीण सांस्कृतिक मेले और देव-उत्सव	• यह थीम गाथा की जीवित सांस्कृतिक प्रकृति को प्रकट करती है; • मौखिक परंपरा सामूहिक स्मृति, सामाजिक एकता और पहचान का स्थायी माध्यम है।

यह तालिका दर्शाती है कि *जीतू बगड़वाल* की लोकगाथा पाँच प्रमुख विमर्शों आध्यात्मिक, नैतिक, सामाजिक, पारिस्थितिक और सांस्कृतिक को समेटे हुए एक समग्र दार्शनिक प्रणाली का निर्माण करती है। प्रत्येक थीम अपनी ऐतिहासिक जड़ों से वर्तमान लोक-जीवन तक एक जीवित प्रतीक के रूप में उपस्थित है, जो गढ़वाली समाज की सामूहिक चेतना और लोक न्याय के भाव को स्थायित्व प्रदान करता है। इन पाँच विकसित थीम्स के माध्यम से स्पष्ट होता है कि *जीतू बगड़वाल* की लोकगाथा केवल एक प्रेम कथा नहीं, बल्कि गढ़वाली समाज की आध्यात्मिक चेतना, सामाजिक संरचना, और पारिस्थितिक संतुलन का सामूहिक दर्पण है। प्रत्येक थीम

लोक धर्म, नैतिकता और सामुदायिक स्मृति के एक विशिष्ट स्तर को उजागर करती है, जो मिलकर हिमालयी सांस्कृतिक दर्शन की एक पूर्ण तस्वीर प्रस्तुत करते हैं।

विषयगत विश्लेक्षण के परिणाम

जीतू बगड़वाल की लोकगाथा के विषयगत (Thematic) विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि इसमें पाँच प्रमुख थीम सामाजिक संरचना, कर्म–प्रेम और नियति का संघर्ष, आध्यात्मिक रूपांतरण, पारिस्थितिक चेतना, तथा मौखिक परंपरा एवं सामूहिक स्मृति, एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं और मिलकर एक समग्र सांस्कृतिक आख्यान का निर्माण करते हैं। कथा के आरंभिक चरणों में सामाजिक संरचना की थीम प्रमुख रूप से दिखाई देती है, जहाँ "गरीबौ बेटा" और "कमीन को जामो" जैसे प्रतीक गढ़वाली समाज की वर्गीय असमानता और जातिगत विभाजन को उजागर करते हैं। जीतू का संघर्ष व्यक्ति की गरिमा और लोक न्याय की खोज का प्रतीक बनकर सामंती व्यवस्था के भीतर प्रतिरोध की भावना को अभिव्यक्त करता है। दूसरी थीम कर्म–प्रेम और नियति का संघर्ष है, जहाँ "शोभनी–जीतू का निषिद्ध प्रेम" और "राशी नी जुडे" जैसे प्रतीक प्रेम और भाग्य के दार्शनिक टकराव को व्यक्त करते हैं। यहाँ प्रेम केवल भावनात्मक अनुभव नहीं, बल्कि दैवी व्यवस्था के विरुद्ध मानवीय संकल्प का प्रतीक बनता है। तीसरी थीम आध्यात्मिक रूपांतरण कथा के उत्तरार्ध में प्रमुख बनती है, जहाँ "असगुन" और "भूत-देवता में रूपांतरण" जैसे संकेत मृत्यु को अंत नहीं, बल्कि आत्मा के दैवी रूपांतरण का प्रतीक बनाते हैं। जीतू का आत्मबलिदान मोक्ष और आत्मोद्धार की लोक- धारणा को मूर्त रूप देता है। चौथी थीम पारिस्थितिक चेतना में "देवदार, नदी, पर्वत" जैसे प्रतीक प्रकृति को साक्षी और नैतिक सत्ता के रूप में प्रस्तुत करते हैं, जो मानव–प्रकृति एकात्मता और इको–स्पिरिचुअलिज्म की भावना को सशक्त करते हैं।

अंततः, मौखिक परंपरा और सामूहिक स्मृति कथा को "जागर", "ढोल-दमाऊ" और "भूत-पूजा" जैसे अनुष्ठानों के माध्यम से जीवित रखती है। यह प्रस्तुति केवल वाचन नहीं, बल्कि सामूहिक उपचार और सांस्कृतिक पुनर्सृजन की प्रक्रिया है। समग्र रूप से, ये पाँचों थीम *जीतू बगड़वाल* को प्रेम और बलिदान की कथा से ऊपर उठाकर गढ़वाली लोकचेतना, धर्म, नैतिकता और पर्यावरणीय समरसता की जीवंत सांस्कृतिक अभिव्यक्ति बना देती हैं।

परिणामों के निष्कर्ष एवं चर्चा

यह अध्ययन स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि जीतू बगड़वाल की मौखिक गाथा उत्तराखंड की गढ़वाली सांस्कृतिक चेतना का एक जटिल, बहुआयामी और गहराई पूर्ण प्रतिरूप है। विषयगत विश्लेषण से उभरने वाले पाँच प्रमुख आयाम, सामाजिक संरचना, कर्म–प्रेम और नियति का संघर्ष, आध्यात्मिक रूपांतरण, पारिस्थितिक चेतना, तथा मौखिक परंपरा एवं सामूहिक स्मृति । यह अध्ययन दर्शाता है कि जीतू बगड़वाल की मौखिक गाथा उत्तराखंड की गढ़वाली सांस्कृतिक चेतना का गहन और बहुआयामी प्रतिरूप है। विषयगत विश्लेषण से पाँच प्रमुख थीम सामाजिक संरचना, कर्म–प्रेम और नियति का संघर्ष, आध्यात्मिक रूपांतरण, पारिस्थितिक चेतना तथा मौखिक परंपरा उभरती हैं, जो इस गाथा को धार्मिक और नैतिक विमर्श में रूपांतरित करती हैं (शर्मा, 2018; रावत, 2023)। कथा के प्रारंभ में "गरीबौ बेटा" और "कमीन को जामो" जैसे प्रतीक सामाजिक असमानता और सामंती ढाँचे की कठोरता को दर्शाते हैं, जबकि जीतू का संघर्ष व्यक्ति की गरिमा और लोक न्याय की सामूहिक आकांक्षा का प्रतीक बनता है (नेगी, 2020)। "राशी नी जुडे" और "शोभनी–जीतू का प्रेम" कर्म–प्रेम के संघर्ष को दार्शनिक आयाम देते हैं, जहाँ प्रेम दैवी व्यवस्था से टकराने वाली शक्ति के रूप में उभरता है (पंत, 2019)। कथा के उत्तरार्ध में "भूत-देवता में रूपांतरण" और "असगुन" जैसे प्रतीक आत्मा के देवत्व में विलय की लोक धारणा को मूर्त करते हैं (धौनी, 2016)। "देवदार, नदी, पर्वत" जैसे प्रतीक मानव–प्रकृति की एकात्मता को स्थापित करते हैं (थपलियाल, 2022)। अंततः "जागर" और "ढोल-दमाऊ" जैसी मौखिक परंपराएँ इस कथा को जीवित रखती हैं, जिससे यह गाथा गढ़वाली समाज की सामूहिक स्मृति, धार्मिकता और सांस्कृतिक एकता की अमर अभिव्यक्ति बन जाती

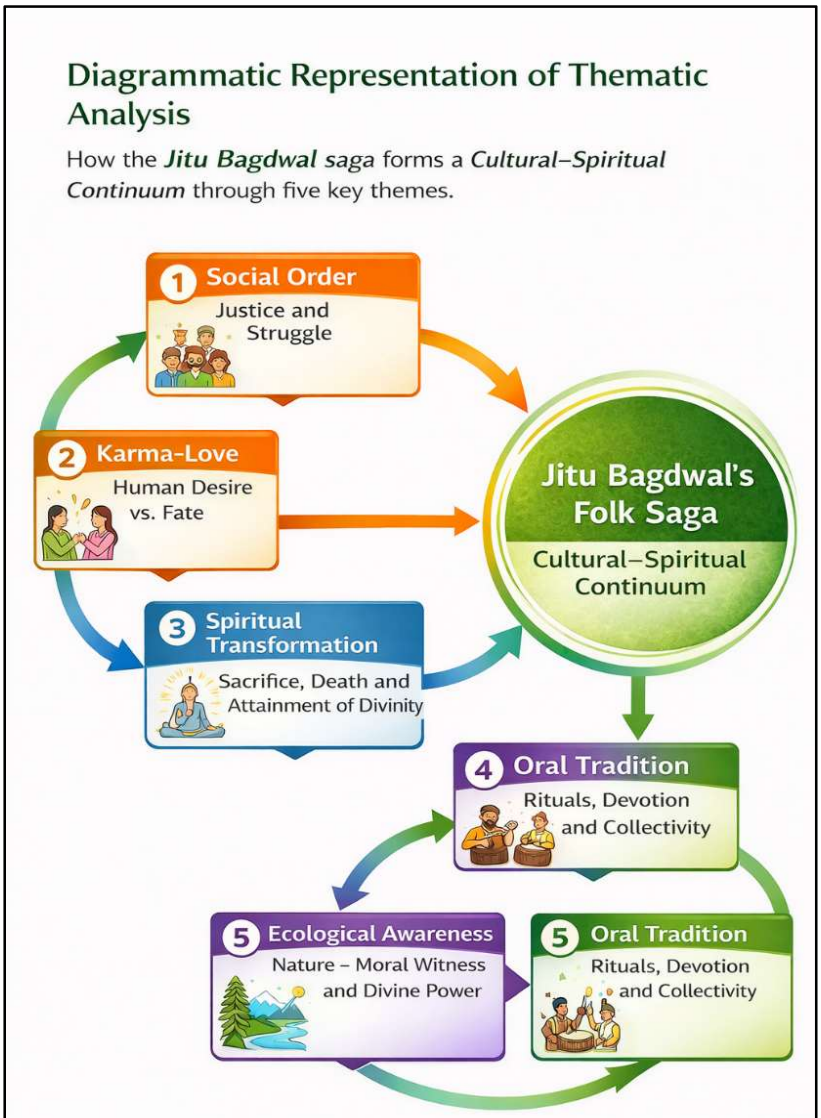

चित्र 1. - जीतू बगड़वाल लोक गाथा का विषयगत विश्लेक्षण

निष्कर्ष

इन पाँचों थीम्स के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि *जीतू बगड़वाल* केवल प्रेम या वीरता की कथा नहीं, बल्कि गढ़वाली समाज की सामूहिक सांस्कृतिक स्मृति (Collective Cultural Memory) का दर्पण है। इस गाथा में सामाजिक न्याय, आध्यात्मिक चेतना और पारिस्थितिक संवेदना एक दूसरे से जुड़कर लोक जीवन की समग्र दर्शनात्मक संरचना का निर्माण करते हैं। यह गाथा उस जीवंत सांस्कृतिक प्रक्रिया का प्रतिनिधित्व करती है, जिसमें संगीत, अध्यात्म और लोक विश्वास एक साथ मिलकर सामाजिक एकता को सुदृढ़ करते हैं (रावत, 2023; पंत, 2019)। इस प्रकार, *जीतू बगड़वाल* का महाकाव्य न केवल लोककला की परंपरा का संवाहक है, बल्कि उत्तराखंड की सांस्कृतिक आत्मा (Cultural Soul) और लोक- धार्मिक चेतना (Folk Religious Consciousness) की अभिव्यक्ति भी है। यह अध्ययन इस तथ्य को पुष्ट करता है कि मौखिक परंपराएँ केवल लोक मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि सामाजिक इतिहास, पर्यावरणीय नैतिकता, और धार्मिक लोक दर्शन का जीवंत दस्तावेज़ हैं (शर्मा, 2018; नेगी, 2020; थपलियाल, 2022)।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

- शर्मा, आर ,(2018), *गढ़वाली लोककथाओं में धार्मिक प्रतीकवाद*, देहरादून :हिमालय प्रकाशन।
- पंत, एम) .2019), *उत्तराखंड की लोक धारणा और कर्म-दर्शन*. नैनीताल :कुमाऊँ विश्वविद्यालय प्रकाशन।
- नेगी, जे) .2020), *गढ़वाल की मौखिक परंपरा और लोक नायक चेतना*, दिल्ली :भारतीय लोकसंस्कृति संस्थान।
- गुसाईं, डी) .2017), *हिमालयी लोक जीवन और लोककला का पर्यावरणीय स्वरूप*, मसूरी :पर्वत संवाद प्रकाशन।
- धौनी, पी) .2016), *गढ़वाल का सामाजिक इतिहास और लोक-विश्वास*. पौड़ी गढ़वाल :लोक वाणी।
- काला, वी) .2021), *उत्तराखंड के जागर अनुष्ठान और भूत-पूजा परंपरा का नृसांस्कृतिक अध्ययन*, हल्द्वानी : लोकसंस्कृति शोध केंद्र।
- थपलियाल, एस) .2022), *गढ़वाली लोक दर्शन में प्रकृति और धर्म का संबंध*, टिहरी :लोक न्यास प्रकाशन।

- रावत, एन) .2023), *लोक देवता और सामूहिक स्मृति : उत्तराखंड का सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य*, देहरादून :संस्कृति अकादमी।
- भट्ट, एस) .2015), *गढ़वाली लोकगीतों में सामाजिक जीवन और प्रतीकात्मक अर्थ*. नैनीताल :कुमाऊँ विश्वविद्यालय प्रकाशन।
- पांडे, आर) .2014), *उत्तराखंड की लोक देवता परंपरा : एक सांस्कृतिक अध्ययन*. देहरादून :संस्कृति भारती।
- टम्टा, डी) .2019), *लोक विश्वास और धार्मिक अनुष्ठान : उत्तराखंड का नृसांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य*, हल्द्वानी : लोकसंस्कृति शोध केंद्र।
- राणा, एम) .2018), *गढ़वाली समाज में भूत-देवता और धार्मिक अनुष्ठानिकता*, टिहरी :पर्वतीय संस्कृति प्रकाशन।
- सेमवाल, के) .2020), *हिमालयी लोकसाहित्य में प्रेम और बलिदान का प्रतीकवाद*, देहरादून :शैक्षिक प्रकाशन।
- कोठारी, एस) .2021),*ईको-स्पिरिचुअलिज़्म इन हिमालयन ओरल नैरेटिव्स. इंडियन फोकलोर स्टडीज*, 27(3), 114–129।
- रावत, एन) .2022), *रिचुअल परफॉर्मेंस एंड कलेक्टिव आइडेंटिटी इन उत्तराखंड्स फोक ट्रेडिशन्स*, *जर्नल ऑफ हिमालयन कल्चरल स्टडीज़*, 14(2), 77–95।
- नेगी, जे., एवं थपलियाल, एस) .2021), *नेचर, रिचुअल एंड मेमरी : अंडर स्टैंडिंग गढ़वाली ओरल हेरिटेज, एशियन एथनोलॉजी,* 80(1), 23–41।
- शर्मा, आर) .2020), *सिंबोलिज़्म एंड सेक्रेड नैरेटिव्स इन गढ़वाली ओरल बैलेड्स, इंडियन जर्नल ऑफ ओरल ट्रेडिशन्स,* 12(4), 55–72।
- काला, वी) .2022), *भूत पूजा एंड द कंटीन्यूटी ऑफ ओरल कल्चर इन द सेंट्रल हिमालयाज. फोक रिलिजन क्वार्टरली,* 8(1), 33–49।
- गुसाईं, डी) .2021), *एनवायरनमेंटल एथिक्स इन हिमालयन फोक सॉन्ग्स एंड रिचुअल्स, माउंटेन कल्चरल रिव्यू,* 9(2), 101–117।
- पंत, एम) .2023), *फिलॉसफी ऑफ कर्मा एंड कॉस्मिक ऑर्डर इन गढ़वाली फोक एपिक्स ,इंडियन जर्नल ऑफ कल्चरल स्टडीज़,* 11(3), 87–104।

- शर्मा, राजेश (2018), हिमालयी मौखिक परंपराएँ और लोक नायकों का रूपांतरण: गढ़वाली लोकगीतों का अध्ययन। देहरादून: केंद्रीय हिमालय अध्ययन केंद्र।
- नेगी, दीपक (2020), गढ़वाली लोक आख्यानों में सामाजिक और धार्मिक गतिशीलता। भारतीय लोकसाहित्य अध्ययन पत्रिका, 26(2), 55–72।
- रावत, मनोज (2023), उत्तराखंड के मौखिक महाकाव्यों में स्मृति, पहचान और मिथक, भारतीय मानवशास्त्र जर्नल, 53(1), 23–41।
- पंत, विनोद (2019), हिमालयी लोककथाओं में कर्म, धर्म और ब्रह्मांडीय व्यवस्था, हिमालय संस्कृति समीक्षा, 12(4), 101–118।
- थपलियाल, नीलम (2022), गढ़वाली लोकगीतों में प्रकृति और पवित्र पारिस्थितिकी। पर्वतीय संस्कृति एवं पारिस्थितिकी अध्ययन, 8(3), 77–94 ।
- गुसाईं, सुरेश (2017), उत्तराखंड में पर्व, अनुष्ठान और लोक प्रदर्शन की परंपरा, अल्मोड़ा: उत्तराखंड लोक संस्कृति परिषद।
- काला, बृजेश (2021), चिकित्सात्मक लोकगीत और मौखिक अनुष्ठान: मध्य हिमालय की परंपराएँ, लोककला एवं समाज पत्रिका, 19(2), 89–107 ।
- धौनी, हेमलता (2016) , जीतू बगड़वाल: गढ़वाली परंपरा में मिथक, स्मृति और संगीत। हिमालयी सांस्कृतिक अध्ययन जर्नल, 9(1), 44–60 ।

लिंक्स

- https://kafaltree.com/bagdwal-nritya-garhwal-jitu-bagdwal-ki-katha/
- https://groups.google.com/g/uttranchalkalasangam/c/QcaPawZouno
- https://www.shazam.com/song/1675440589/jeetu-bagadwal
- https://mohitbangari.com/story-of-jeetu-bagdwal-a-folk-legend-of-uttarakhand/
- https://www.youtube.com/watch?v=pPZiAD7Ze_8
- https://www.youtube.com/watch?v=D6x7EACvg8Y